B.A. Part II / Paper IV / lecture no - 11

Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor
Marwari college Darbhanga.

Topic सामाजिक सर्वेक्षण के गुण या महत्व (Merits or Importance of social Survey)

जैसा कि हम सभी जानते है कि सामाजिक विज्ञानों में सर्वेक्षण विधि काफी महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा सामाजिक घटनाओं, समस्याओं का अध्ययन किया जाता है साथ ही समाज-सुधार के उद्देश्य को सामने रखते हुए समाधान भी ढूंढने का प्रयास किया जाता है। इसके बहुत सारे गुण है जिसकी चर्चा हम इस प्रकार कर सकते है —

1) अध्ययन विषय से प्रत्यक्ष सम्पर्क — इस विधि में अध्ययनकर्ता घटना व समस्या के विविध पक्षों का अवलोकन व तथ्यों का संकलन आदि प्रत्यक्ष रूप से कर उनके आधार पर निष्कर्ष निकालता है।

Scanned by CamScanner

2) समस्या का वैज्ञानिक अध्ययन (objective study of the Problem) - इस विधि द्वारा तथ्यों के निरीक्षण, संकलन, अवलोकन व निष्कर्ष निकालने का गुण होता है।

3) वैध उपकल्पनाओं का निर्माण (Formulation of valid Hypotheses) - सर्वेक्षण द्वारा एकत्रित तथ्यों के आधार पर जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं, उनके आधार पर वैध उपकल्पनाओं का निर्माण सम्भव है। इनके आधार पर इन उपकल्पनाओं के द्वारा नए अनुसंधान किए जा सकते हैं तथा प्रस्थापित उपकल्पनाओं की परीक्षा भी की जा सकती है।

4) सामाजिक समस्याओं का समाधान (solution of social Problems) - इस विधि द्वारा वैज्ञानिक उपायों के आधार पर समस्या के कारणों को इस उद्देश्य से ढूँढने का प्रयास किया जाता है कि उस समस्या का समाधान किया जा सके।

5) प्रामाणिक एवं निर्भर योग्य (Reliable and valid) - इस विधि में सम्पूर्ण अध्ययन वास्तविकताओं पर आधारित होता है जिन्हें सर्वेक्षणकर्ता अपने भौतिक रूप में देखता है और समझता है साथ ही विश्वसनीय सूचनाएँ एकत्रित करता है।

Scanned by CamScanner

6) व्यावहारिक गुण (Practical Quality) - इस विधि का उपयोग कई व्यावहारिक मुद्दों के संदर्भ में किया जाता है - किसी व्यापारिक वस्तु की बिक्री की संभावनाओं को ज्ञात करना, औद्योगिक विकास की दर मालूम करना, किसी सामाजिक - आर्थिक - धार्मिक समस्या के प्रति लोगों के दृष्टिकोणों को मालूम करना आदि।

7) सरल विधि (A simple Method) - इस विधि का सबसे बड़ा गुण है कि इसे कम अनुभव वाले व्यक्ति भी उपयोग कर सकते हैं इसके अन्तर्गत सर्वेक्षणकर्ता घटना व समस्या को जिस रूप में देखता है, उसका वर्णन भी उसी रूप में करता है जो कि सरलता का प्रतीक है।

8) सिद्धांतों की पुनर्परीक्षा - इसके माध्यम से विद्यमान परिस्थितियों के संदर्भ में वास्तविक तथ्यों का संकलन कर इस बात की परीक्षा करता है कि एक घटना के संबंध में जो पुराने सिद्धांत हैं वह अब भी ठीक हैं या नहीं।

सामाजिक सर्वेक्षण के गुण के साथ-साथ कुछ सीमाएं भी हैं जिन्हें हम दोष कह सकते हैं जो निम्नलिखित हैं —

1.) खर्चीली विधि — इस विधि में सर्वेक्षणकर्ता का पारिश्रमिक, यात्रा भत्ता, प्रश्नावली, अनुसूची आदि का मुद्रण तथा प्रौद्योगिकी सामग्री व स्टेशनरी आदि में धन व्यय करना पड़ता है।

2) ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तीकरण की सीमित सम्भावनायें — सामाजिक सर्वेक्षण किसी तात्कालिक समस्या के समाधान के लिए और सीमित क्षेत्र में आयोजित किये जाते हैं। अतः इसके निष्कर्षों के आधार पर सिद्धांतों का निर्माण प्रायः नहीं हो पाता है।

3) अभिनति की सम्भावना (Possibility of Bias) — सामाजिक सर्वेक्षण एक लम्बी प्रक्रिया है इस प्रक्रिया के प्रत्येक चरण पर व्यक्तिगत पक्षपात की गुंजाइश रहती है। निदर्शन निकालने व साक्षात्कार करने की ऐसी यो प्रमुख स्थितियां हैं जिन पर व्यक्तिगत जाने-अनजाने के प्रभाव पड़ते हैं। निष्कर्षों पर प्रभाव पड़ने की सम्भावनाएं होती हैं।

4) कार्य-प्रणाली की कठोरता (Regidity in Procedure) — एक सर्वेक्षक को साक्षात्कार के दौरान अनुसूची के प्रश्नों में

छेड़-बदल करने की स्वतंत्रता नहीं होती। इस कठोर नियन्त्रण के वजह से कई बार महत्वपूर्ण सूचनाओं के सूचनाएँ प्राप्त करने में अवेक्षणकर्ता सक्षम नहीं हो पाता।

5) सर्वेक्षण दल से जुड़ी समस्याएँ (Problems Related to Survey Team) – सर्वेक्षण जब विस्तृत क्षेत्र से सम्बन्धित होता है तब बड़े दल की जरूरत पड़ती है साथ ही विभिन्न स्तरों पर आपसी समन्वय के अभाव में अनेक समस्याएँ भी उभर कर सामने आने लगती हैं।

उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद भी सामाजिक सर्वेक्षण काफी महत्वपूर्ण हैं तथा तथ्य संकलन की एक उपयुक्त विधि है।

Sarita Kumari
21/4/20.

Scanned by CamScanner